डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोट
असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
लक्ष्मी - शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी, अलिबाग
संपर्क : sangitachitrakoti@gmail.com
Mob- 9421905599

फांस: कृषक वेदना का महाकाव्य

जनवादी धारा के प्रमुख कथाकारों में संजीव का स्थान अनन्य साधारण है। वे हिंदी साहित्य के सशक्त, निडर, साहसी अन्वेषक एवं संजीदा साहित्यकार है। उनका जन्म अत्यधिक गरीब, कृषक परिवार में हुआ। उन्हें पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक और नौकरी आदि कई स्तरों पर अपने विरोधी तत्वों के साथ जूझना पड़ा है। अतः उनका सारा जीवन प्रचलित समाज व्यवस्था की विसंगतियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली एक जीती जागती मिसाल है। समाज के मुख्यधारा से कटे वंचित वर्गो की समस्याओं के साथ संघर्ष करने के लिए उन्होंने अपनी कलम को हथियार बनाया। अपनी रचनाओं में विसंगतियों एवं विडंबनाओं का मार्मिक चित्रण किया। रूसी साहित्यकार 'निकोलाई गोगोल' संजीव के प्रेरणास्थान रहे हैं। 'गोगोल' प्रगतिशील विचारधारा के पुरस्कर्ता थे और उनकी साहित्यिक प्राथमिकता जनोन्मुखता का पर्याय थी। स्वयं संजीव कहते है - "गोगोल हमेशा ही मेरा मानक रहा है। उसने वह नहीं लिखा जो वह लिख सकता था। उसने वह नहीं लिखा जो जनता चाहती थी, बल्कि उसने वह लिखा जिससे उसके समाज और देश का भला होता। अभी भी मेरा लक्ष्य वही है।"1 संजीव ने भी अपने साहित्य में युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप लेखन किया। परिवर्तनकारी भूमिका निभाने के साथ साथ साहित्य की साहित्यिकता भी सुरक्षित रखी। संजीव का अधिकांश लेखन शोध केंद्रित है। स्वयं संजीव का मानना है कि "बिना शोध और संधान के मुझे लगता है कि मैं नहीं लिख पाऊंगा।"2 शायद इसीलिए उनके कथा साहित्य में मजदूर, किसान, नारी, दलित, आदिवासियों के शोषण का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी हर रचना एक नई जमीन तलाशती है। इतना ही नहीं बल्कि पूरी निष्ठा और सत्यता के साथ प्रस्तुत होती है।

संजीव किसान, मजदूरों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहे हैं। उनका 'फांस' उपन्यास किसानों का पक्षधर है। देशभर में बढ़ रही किसानों की आत्महत्याएँ फांस उपन्यास की पृष्ठभूमि है। भारत गांवों में बसता है और गाँव की अधिकांश आबादी कृषि कार्य करती है। लगभग 70% लोग किसान है। इसलिए भारत की पहचान एक 'कृषि प्रधान देश' के रूप में है। देश की अर्थव्यवस्था के विकास में किसानों का योगदान अहम है। महात्मा गांधी ने किसानों को भारत की आत्मा कहा। लेकिन देश के बहुत से किसान बेहाल है। आर्थिक दृष्टि से बेहद असुरक्षित है। किसान सही अर्थ में 'अन्नदाता' है। सबका पेट भरने वाला, सबका तन ढकने वाला किसान खुद भूखा, नंगा और लाचार क्यों है? सबके लिए अनाज उपजाता है, वही आत्महत्या करने के लिए मजबूर क्यों है? इसी ज्वलंत और बुनियादी विषय को संजीव ने चुना है। किसानों की इस अवस्था का प्रमुख कारण आजादी के बाद शुरू से ही सरकार द्वारा किसानों की अवहेलना है। साथ ही मान्सून की विफलता, सूखा, ऋण का अत्यधिक बोझ। आदि समस्याओं के कारण विभिन्न क्षेत्रों में किसानों की आत्महत्याएँ बढ़ रही है।

प्रस्तुत उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के 'बनगांव' का चित्रण किया गया है। कथाकार संजीव विदर्भ में रहे। आत्महत्या करने वाले किसानों के परिवारों के दुख में शामिल हुए और फिर एक रचनाकार की भूमिका अदा की। बनगांव के किसानों और गाँव की पूरी जिंदगी का दर्द, कसमसाहट को संजीव ने वाणी दी है। विदर्भ में अधिकतर खेती कपास सोयाबीन और एक की होती है। यहाँ कपास को 'सफेद सोना' कहा जाता है।

उपन्यास का प्रमुख पात्र है शिबू। शिबू भारत के किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। शिबू के संकट भारत के किसानों के संकट है। उसका संघर्ष तमाम भारतीय किसानों का संघर्ष है। यहां किसानों ने अधिक पैदावार के लिए अमेरिकी बीज "बीटी का उपयोग किया जो उनके लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ। इससे जमीन की उर्वरता कम तो हुई ही साथ ही तमाम तरह की बीमारियों ने भी फसल को नुकसान पहुंचाया। खेती ऐसी है जो बे मौसम बरसात या अकाल के कारण नष्ट होती है। किसान हर बार धोखा खाता है पर फिर से आशाओं के स्वप्न मन में सहला कर खेती करने के लिए प्रयासरत हो जाता है। शिबू की यह तीसरी बुवाई थी। इस बार पूजा करके सिर को कई बार माटी को लगाया

था। कुलदेवी से मिन्नतें करते समय कंठ भारी हो गया क्यों ना हो अपनी पत्नी की कान की बाली बेचकर उसने बीजा खरीदा था। मन ही मन कुलदेवी की प्रार्थना "अब इम्तिहान मत लेना देवी। मर जाएंगे हम।"3 शिबू की छोटी बेटी भी बीजा को हाथ में लेकर बीजा को धमका रहे ही। "इस बार बहना नहीं, बिलाना नहीं, सड़ना नहीं, सुखना नहीं, दगा मत देना, जल सिल समझा ना ? बहुत मारूंगी हां "।4 मीठी धमकी के बाद उसने बीजों को चुमा और बो दिया कालीमाटी में। इन धोखो की मार झेलते हुए उत्पन्न आर्थिक हानी कृषकों की कमर तोड़ देती है जिससे उभर पाना इनके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसी घोर विपत्ति में किसानों को कर्जा निकालने के सिवा कोई चारा नहीं रहता। "भारतीय किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही बड़ा होता है, और कर्ज में ही मर जाता है"।5 बैंक केवल फसलों के लिए कर्जा देती हैं। किसान की अन्य भी जरूरत है -- शिक्षा, स्वास्थ्य, शादी, खुशी है गम है। इसलिए गांव के साहूकारों से कर्ज लेना उन्हें आसान लगता है फिर वह 10% प्रतिमाह क्यों न हो। शिबू ने भी कर्जा लिया था पर मर खपकर कर्जा चुकाया भी था। उसकी पत्नी और बाल बच्चों को कभी सुस्वादु भोजन ढंग का कपड़ा नहीं मिला। सुरक्षा नहीं मिली। मंदिर का पुजारी शिबु की बेटियों को गलत दृष्टि से देखता है। पत्नी शकुन बेटियों की शादी कर देने की सलाह देती है। पर शिबु अपने बेटियों की शादी करने के लिए असमर्थ है। क्योंकि वह लाख लाख रुपये दहेज नहीं दे सकता। चारों और से घिरा शिबू रोज-रोज मरता रहा और आखिरकार उसका विश्वास खत्म हुआ। परिस्थितियों ने शिबू के विश्वास को तोड़ा। शिबू ने अपने ही बनाए कुएं में कूदकर आत्महत्या कर अपनी जीवन यात्रा खत्म कर दी। पर अफसोस मरने के बाद भी किसानों की प्रताड़ना खत्म नहीं होती। सरकार मुआवजे के लिए मृत्यु का भी पात्र - अपात्र खेल खेलती है। शिबू की आत्महत्या को अपात्र घोषित किया क्योंकि उस पर कोई कर्जा नहीं था। ऐसे ही अनेक मौतें आत्महत्याएं नहीं मानी गई। बेटा मरा, पर जमीन बाप के नाम थी। अतः आत्महत्या अपात्र । महिला शेतकरी 'आशा वानखेडे' आत्महत्या अपात्र करार दी गई। उस समय सुरेश साहस करके बोलता है "देखो साहब तुम पत्नी की मौत को पात्र घोषित करो या अपात्र तुम्हारी मर्जी। मगर तुम्हें कोई हक नहीं कि मेरी बायको को लांछित करो। वो मुझसे ज्यादा पढ़ी लिखी, सच्ची किसान थी। निखट्टु मै था, शराबी मै था ...

वो देवी थी देवी"।6 पुरुष प्रधान मानसिकता में स्त्री को किसान नहीं माना जाता। इतिहास बताता है खेती कार्य स्त्री के ही दिमाग की उपज है। पर हमारी सरकार स्त्री को किसान मानने को तैयार ही नहीं। महिलाएं क्या नहीं कर सकती। "बल्कि महिला किसान तो शेती के साथ ही साथ बाकी जिम्मेदारियाँ भी संभालती है। परिवार रसोई, बच्चों की भी और मर्दों की सारी जिम्मेदारियां भी। आज रसोई में क्या बनेगा से लेकर किस खेत में बीया पड़ेगा, सब्जी में कौन सा मसाला पड़ेगा से लेकर किस फसल में कौन सी खाद पड़ेगी, बच्चे पैदा करने से लेकर संतानों तक के लिए सारे खर्चे जुटाने तक।"7 पर फिर भी आशा वानखेडे के मृत्यु का कारण लिखा गया "शराब पति के आए दिन घरेलू झगड़े से तंग आकर उसने जहर पिया।" सचमुच 'एक मरती हुई प्रजाति का नाम है किसान।' संजीव ने 'नाना' नामक पात्र का निर्माण किया है। नाना अपने ही किसानों की रोज-रोज की आत्महत्याओं से चिंतित तो हैं ही साथ ही सरकार और अपने ही नेताओं की उपेक्षा से दुखी हैं। किसानों को जब अपने नेताओं की जरूरत होती है तब नेता ढूँढने से भी नहीं मिलते। नेता अदृश्य ! किसानों की भयंकर त्रासदी से जुड़कर नाना समस्याओं पर समाधान ढूंदने का प्रयास करते है। वे किसान से कहते है " सोचते हो, तुम्हारे दुखों से दुखी और द्रवित हो जाएगी सरकार! दान, दया की बरसात करेगी। है न? कीड़े-मकौड़े की तरह मर जाने वाले डरपोकों! तुम क्या समझते हो, तुम्हारे आत्महत्या कर लेने से शासन बदल जायेगा? प्रशासन बदल जायेगा? सिस्टम बदल जायेगा? कोच्छ नहीं बदलेगा! तुम समझते हो, तुम्हारे नेता लोगों का पत्थर दिल पसीज जायेगा। कभी नहीं। मइ देख के आता चंद्रपुर में, उधिर तुम मर रहे थे, इधिर सब नंगा नाच देख रहे थे।"8   नाना यह भी समझाते है कि   'आत्महत्या कोई विकल्प नहीं है, इससे समस्याएं सुलझने की अपेक्षा बढ़ती अधिक हैं।' संजीव अपने उपन्यास में देश के किसानों की समस्याओं को साझा करते ही है साथ ही समाधान भी प्रस्तुत करते है। वे कहते हैं "फांस खतरे की घंटी भी है और आत्महत्या के विरुद्ध दृढ़ आत्मबल प्रदान करने वाली चेतना और जमीनी संजिवनी का संकल्प भी"।9 उनके सुझाव इस प्रकार है...

- "देश को बचाना है तो देशवासी को बचाओ और शेतकरी को बचाना है तो इन परजीवीयों और दलालों को उखाड़ फेंको।"10

- जल किसानों की प्राथमिक जरूरत है। परंतु सिंचाई के नाम पर किसानों को घोटाले मिले हैं इसलिए पहली वरीयता जल संरक्षण को देनी चाहिए।
- संपूर्ण मद्य और नशे का निषेध।
- जी एम बीजों के स्थान पर देशी बीजों का, विदेशी खातों की जगह देसी कंपोस्ट और नाइट्रोजन फास्फेट के देशी विकल्प कीटनाशकों के देसी विकल्प ताकि वे मिट्टी, पानी को प्रदूषित न कर सके और तितलियों मधुमक्खियों तथा मित्र पक्षियों प्रकारांतर से मानव जीवन को बचाया जा सके।
- कर्ज देने वाली एजेंसियों का संपूर्ण बायकाट। सरकारी बैंकों के ऋण लेने - देने की व्यवस्था को किसानोंपयोगी बनाया जाए वरना किसान कर्ज से दूर रहेंगे।
- इनकी जगह कृषक सहकारिता की स्थापना गुजरात मॉडल के आधार पर कृषि व ग्राम उत्पादों का संग्रह, मूल्य निर्धारण संचय और विपणन की व्यवस्था करेगा।
- डीजल, बिजली आदि पर सब्सिडी समाप्त करने की सरकारी पहल कदमी का हर तरह से विरोध करना होगा"।11
- वास्तव में मुआवजा व ऋण माफी इनकी समस्याओं का हल नहीं है क्यों कि ये तो भ्रष्टाचार कि भेंट चढ़ चुके है। वास्तव में इनकी बुनियादी समस्याओं के हल ढूँढने है।
- किसानों को केंद्र में रखकर योजनाएँ बनानी होगी।
- किसानों को आगे बढ़कर बाज़ार और तंत्र को अपने नियंत्रण में लेना होगा।

इस प्रकार संजीव ने किसानो की समस्याओं पर ठोस समाधान देने की चेष्टा की है। पर आज भी किसानों का दर्द कम नहीं हुआ है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में हमने 'एबीपी माझा' पर खबर देखी महाराष्ट्र में किसानो को ठगने वाला प्रसंग घटित हुआ। अकोला के किसानों ने महाबीज महामंडल के सोयाबीन बीजा की बुवाई की पर वह बीज उगा ही नहीं। नकली या निकृष्ट दर्जे का बीजा देकर किसानों को फंसाया गया। महाबीज ने किसानों की महालुट की। किसानो ने महाबीज महामंडल के विरुद्ध शिकायत दर्ज की। लेकिन उल्टा चोर कोतवाल को डाटे महाबीज महामंडल को ये देखना चाहिए था की आखिर बीजा उगा क्यों नहीं? अपनी गलती या लापरवाही पर

शर्मिंदा होना तो दूर की बात उल्टा महाबीज महामंडल के कर्मचारियों ने ही सरकार को शिकायत पत्र लिखा। इससे स्पष्ट होता है की महामण्डल प्रशासन अपनी ज़िम्मेदारी झटकना चाहता है। ये खुला षडयंत्र है किसानों के खिलाफ। कैसी विडम्बना है ये किसानों की? एक सच्चे मामले में किसानो के साथ महमण्डल प्रशासन का यह टकराव वह भी लोकतन्त्र में। इस तरह यदि किसानो के प्रतिकूल सरकारी व्यवस्था रहेगी तो किसानों की दयनीय हालत और उग्र हो जाएगी। अतः तत्काल उपचारात्मक उपाय करने की आवश्यकता है। पहले उत्तम खेती माध्यम व्यापार और कनिष्ठ नौकरी मानी जाती थी परंतु समय बदला और मान्यता भी बदली। उत्तम खेती आज कनिष्ठ हो गयी है और कनिष्ठ मानी जानेवाली नौकरी आज श्रेष्ठ मानी गयी।किसानी का काम अकुशल माना गया और किसानों की अवहेलना की गई जो आज भी जारी है। वास्तव में किसानों की समस्याएं और आत्महत्याओं के पीछे हमारी नीतियां है।उसे बदलने की आवश्यकता है। फिर से उत्तम खेती माध्यम व्यापार और कनिष्ठ नौकरी इस त्रिसुत्री की नितांत आवश्यकता है। भारतीय संविधान की नजर में सब एक समान है। पर हमने संविधान में जो कहा नजरअंदाज कर दिया। दरअसल हमने उस तरह का समाज बनाया ही नहीं जिस समाज में सब को जीने का अधिकार है।

संदर्भ

आलोच्य उपन्यास : **-** संजीव **,** फांस**,** वाणी प्रकाशन**,** दिल्ली **2015**

1. कथाकार संजीव , पूर्ववृत्त - पृष्ठ 106
2. कथाकार संजीव , पूर्ववृत्त - पृष्ठ 103
3. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 99
4. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 99
5. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 15
6. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 147
7.संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 150
8. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 115,116
9. प्रेमपाल शर्मा - फांस उपन्यास , वाणी प्रकाशन , पृष्ठ भूमिका

10. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 257
11. संजीव , फांस, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ 250